फरीदाबाद
मजदूर समाचार
हर जगह, सब से, जब भी समय मिले

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें—
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर 320 1/— फरवरी 2015

''नटखट गिलहरी ने जंगल उगाया'' वितरण करने के पश्चात आई.एम.टी. मानेसर में शेयर्ड ऑटो में बैठ कर कई साथी चले। मित्सुबिशी फैक्ट्री में कार्य करता एक युवा बहुत मन लगा कर गिलहरी की स्मृति-अस्मृति के बारे में पढने लगा। पढ कर उसने कुछ सवाल उठाये।

पहला प्रश्न। औद्योगिक क्षेत्रों में नींव तक हिला देने वाली व्यापक क्रियाओं का जोश, सरूर, उत्कटता, मोहकता, ज्वार कहाँ जाते हैं ?

सवाल पर अनेक साथियों से विभिन्न स्थानों पर व्यापक, अस्थिर-चित्त करने वाले आदान-प्रदान हुये। एक साथी ने बताया : आई.एम.टी. मानेसर में एक फैक्ट्री में प्रेशर डाई कास्टिंग मशीन में सिर आने से हुई मृत्यु के 24 घण्टों के भीतर ही फरीदाबाद में दो फैक्ट्रियों में खलबली हुई और मैनेजमेन्टों को तत्काल कार्यस्थल पर सुरक्षा के उपाय लागू करने पड़े। इसे सुनने में एक सहमति थी कि प्रभाव स्थानीय नहीं रहते, उनका हस्तांतरण और स्थानांतरण लगातार होता रहता है। दुविधा इस पर थी कि इस हस्तांतरण के प्रभाव की उत्कटता और अवधि के उतार-चढाव का परिमाण और पैमाना क्या हैं। लेकिन यह मान्य रहा कि प्रभाव का छितराव अनियत, अनिर्धारित और अनिश्चित है।

दूसरा प्रश्न। नींव तक हिला देने वाली क्रियायें प्रचलित देखने और सोचने की आदतों का किस हद तक कब्जा हटा पाती हैं ?

इस सवाल से सक्रिय हुये संवादों में बहुत उतार-चढाव रहा। ओखला से एक साथी की योजना फोकस में आई, जिसमें मारुति मानेसर के युवा राजनैतिक कैदियों को सोच में जीवंत रखने के लिये टी-शर्ट बनाना था। सब में सहमति थी कि घनिष्ठ और गतिशील, अदृश्य और प्रत्यक्ष जोड़ व मेल सब के बीच हैं। दुविधा इस पर थी कि ये भाषा में, माध्यमों में, अनेक रूपों में व्यापक अभिव्यक्ति और बल नहीं पाते। इस बार कोई मान्यता बन नहीं पाई, लेकिन ये सब का मानना था कि हालाँकि वे बाहर धुँधले पड़ जाते हैं, पर मिश्रित, घुमावदार, स्पिन लिये हुये, निराले कदम और सोच सब के कार्यस्थलों के भीतर व्यापक हैं।

तीसरा प्रश्न। गिलहरी रोई और नाची क्यों ?

ये सवाल पूछ कर वो मेट्रो स्टेशन पर उतर गया। बोला, नोएडा में रात को मामा के साथ गिलहरी पर बातचीत जरूर होगी।

कुछ सामान्य-रुटीन बातचीत

★ ***मैक्स शॉप मजदूर :*** '' प्लॉट 10 और 27 सैक्टर-6, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में स्टाफ के 500 लोग कम्पनी ने स्वयं भर्ती किये हैं और सब मजदूर, 1100 मजदूर चार ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे हैं। यहाँ ***होण्डा, मारुति सुजुकी, मित्सुबिशी*** के लिये, अमरीका, जर्मनी, जापान निर्यात के लिये वाहनों के हिस्से-पुर्जे बनते हैं। यहाँ 18 अल्युमिनियम प्रेशर डाई कास्टिंग मशीन, 32 सी एन सी, 35 वी एम सी मशीनों पर मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। शिफ्ट रविवार को बदलती है तब दिन में 12 घण्टे ही काम, पर कभी-कभी एक शिफ्ट वालों को शिफ्ट बदलने के समय लगातार 24 घण्टे काम करना पड़ता है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। निर्धारित उत्पादन बहुत ज्यादा है और टारगेट के लिये सुपरवाइजर-मैनेजर बहुत दबाव डालते हैं। गर्मियों में 750 डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान वाले परिवेश में अतिरिक्त परेशानियाँ। वरकर नौकरी छोड़ते रहते है, फैक्ट्री में हर समय रिक्त स्थान की सूचना, भर्ती होती रहती है। इधर 16 जनवरी को रात 7 बजे से अगली सुबह 7 तक की शिफ्ट में कलीम अन्सारी प्रेशर डाई कास्टिंग मशीन पर कार्य कर रहे थे। रात 2 बज कर 10 मिनट पर कास्टिंग पार्ट डाई में फँस गया और कलीम उसे निकाल रहे थे कि ऑटो प्लान होने के कारण अचानक मशीन चल गई। प्रेशर डाई कास्टिंग मशीन में कलीम का सिर आ गया। तत्काल मृत्यु। मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। फैक्ट्री से बाहर निकल आये। फैक्ट्री 17 को बन्द, 18 जनवरी को भी बन्द, 19 को उत्पादन पुनः आरम्भ।''

★ फरीदाबाद में ***ओसवाल कास्टिंग*** 1 प्लान्ट (प्लॉट 48-49 इन्डस्ट्रीयल एरिया), ***महावीर डाई कास्टिंग*** (प्लॉट 153 तथा 165 सैक्टर-24), और ***ओसवाल ओवरसीज***-ओसवाल कास्टिंग 2 प्लान्ट (प्लॉट 21-22-23 सैक्टर-25) फैक्ट्रियाँ आपस में मैनेजमेन्ट स्तर पर जुड़ी हैं और मजदूर भी इनके बारे में इक्ट्ठे ही बात करते हैं। इन फैक्ट्रियों में अल्युमिनियम प्रेशर डाई कास्टिंग और मशीनिंग के जरिये ***टी वी एस, होण्डा, यामाहा, हीरो*** दुपहियों के संग ***सोना स्टीयरिंग, मितसोवा, ओरियन्ट फैन, जी ई मोटर, टाटा मोटर*** के हिस्से-पुर्जे और पोलैण्ड तथा अमरीका निर्यात के लिये पार्ट्स बनते हैं। इन फैक्ट्रियों में 2200 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। फस्ट प्लॉन्ट के ही मात्र 10-12 मजदूर परमानेन्ट हैं। तीनों फैक्ट्रियों में मजदूर दो बड़े ठेकेदारों, रंजन तथा प्राइवेट, और 20 छोटे ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। बहुत गर्म काम है, डेढ टन अल्युमिनियम पिघलाने वाली मेन भट्टियों से ग्रैफाइट कुठालियों में भर कर प्रेशर डाई कास्टिंग मशीनों की होल्डिंग फरनेसों में हर घण्टे पहुँचाया जाता है। सैक्टर-25 वाली फैक्ट्री में इसे फोर्क लिफ्टर से पहुँचाते हैं जबकि अन्य में एक कुठाली को दो मजदूर उठा कर ले जाते हैं। तीनों फैक्ट्रियों में एम्बुलैन्स नहीं है। एक्सीडेन्ट होते रहते हैं, घायल तड़फते हैं तब रिक्शा ढूँढते हैं, साहब लोग यह भी कह देते हैं कि अपनी साइकिल पर ई.एस.आई. अस्पताल चला जा। काम करते-करते एक मजदूर, जयन्त मशीन पर गिर गया, बेहोश हो गया, लकवा मार गया — इलाज करवाने और क्षतिपूर्ति की बजाय धमका कर जयन्त को नौकरी से निकाल दिया। निर्धारित उत्पादन बढाते रहते हैं और इधर काम कम है कह कर मैनेजमेन्ट सप्ताह में 2 दिन छुट्टी करने लगी है जबकि बाकी के पाँच दिन 12-12 घण्टों की दो शिफ्टों में काम होता है। छुट्टी का मतलब मजदूरों को उस दिन की दिहाड़ी नहीं। आई.एम.टी. मानेसर में मैक्स शॉप में मजदूर की मृत्यु के अगले ही दिन ऑपरेशन हैड प्रेशर डाई कास्टिंग वालों के पास पहुँचा : सुझाव दो, शॉट मारने से पहले गेट लगाओ, डाई में प्रोब्लम है और कोई सुन नहीं रहा तो सीधे मेरे पास आओ। वैसे, डाई कास्टिंग वाले बन्दे अपनी बात मनवा लेते हैं, सिम्पल-सी बात है, मशीनें बन्द कर देते हैं। और, पहली जनवरी को सुबह बड़े साहबों ने आधा घण्टा भाषण दिये : मेहनत करो, कम्पनी घाटे में चल रही है।

★ ***सेक्युरिटी गार्ड :*** '' सोना गिरवी रख कर कर्ज देने वाली ***मुथुट फाइनैन्स*** की फरीदाबाद में 16 शाखायें हैं और प्रत्येक शाखा पर ***पैराग्रीन सेक्युरिटी*** के जरिये 2 गार्ड रखे हैं (जिनमें एक गनमैन)। मैंने मुथुट फाइनैन्स की नीलम फ्लाईओवर शाखा में 8 महीने सुबह 9 से साँय सवा छह की ड्युटी की। ठेकेदार कम्पनी बीच-बीच में दूसरी शाखाओं पर भी ड्युटी लगा देती थी। दस दिसम्बर को अचानक नौकरी से निकाल दिया और नवम्बर की तनखा भी नहीं दी। मुथुट फाइनैन्स के अधिकारी से पैसे माँगे तो वे बोले कि एवरग्रीन सेक्युरिटी को दे दिये हैं, मिल जायेंगे-मिल जायेंगे। पर आज,1 फरवरी तक मुझे नवम्बर की तनखा नहीं दी है।''

★ ***वी जी कौशिको श्रमिक :*** ''प्लॉट 126 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में सुबह 8½ से रात 8½ और रात 8 से अगली सुबह 8½ की दो शिफ्टों में ***मारुति सुजुकी*** और ***होण्डा*** कारों के बहुत हिस्से-पुर्जे बनते हैं। यहाँ करीब 1200 लोगों में 800 मजदूरों को ठेकेदारों के जरिये रखा है। फैक्ट्री में जगह-जगह कैमरे लगा रखे हैं। तनखा 30-31 दिन पर बना कर सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन ठेकेदारों के जरिये रखे 800 मजदूरों में एक को भी नहीं देते, 8½ घण्टे काम के 177 से 182 रुपये देते हैं। तनखा देरी से, छोटे ठेकेदार 12-15 तारीख को और बड़े ठेकेदार 22-23 तारीख को जा कर देते हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से भी कम, 20 से 23 रुपये प्रतिघण्टा। कैन्टीन है, पर थाली 30 रुपये में, और उस से पेट नहीं भरता। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को 12-12½ घण्टे ड्युटी के दौरान एक कप चाय तक नहीं देते — 12 घण्टे बाद रोकते हैं तब खाना देते हैं। शीट मैटल का काम है फिर भी जूते नहीं देते, पैन्ट नहीं देते, और वी जी के लिखे चार कमीज के लिये 700 रुपये दो। कानून हर मजदूर को बोनस देने का है पर यहाँ ठेकेदारों के जरिये रखे 800 मजदूरों में एक को भी बोनस नहीं देते।''

★ ***चोपड़ा ऑटो कास्ट-धर्मा इंजीनियरिंग वरकर :*** ''प्लॉट 42, 43, 44, 54 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित 4 फैक्ट्रियों में 4 फाउण्ड्री और 4 मशीन शॉप हैं। यहाँ ***होण्डा, सुजुकी, यामाहा, टी वी एस*** के ब्रेक रिंग की ढलाई और मशीनिंग होती है। सब जगह मजदूर पीस रेट पर हैं। पीस रेट वर्ष में एक बार तय होते हैं — आपस में बात कर मजदूर यह-यह रेट होने चाहियें ठेकेदारों को बता देते हैं। मशीन शॉप में मजदूर हर साल एक-दो दिन काम बन्द करते हैं तब रेट पर समझौता होता। फाउण्ड्री वाले मजदूर मिट्टी के साँचों में ढलाई करते हैं, बहुत गर्म काम है, रेट के लिये फाउण्ड्री में काम बन्द करने की नौबत नहीं आती और वर्ष में दो बार भी यह वरकर रेट बढवा लेते हैं। मैनेजिंग डायरेक्टर चारों फैक्ट्रियों में चक्कर काटता रहता है, कहता है कि जाँच वाले आयें तब ठेकेदार मत कहना, फोरमैन कहना। जाँच वाले 6-7 महीने में आते हैं तब जिनकी ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं उन्हें बाहर रखते हैं। इधर वर्ष-भर से कैमरे लगा दिये हैं। भविष्य निधि में गड़बड़ी करते हैं, मजदूरों की तनखा से जो पैसे काटते हैं वे भी पूरे जमा नहीं करते और कम्पनी का हिस्सा तो जमा करते ही नहीं। मजदूर के पी.एफ. खाते में जहाँ 50 हजार रुपये होने चाहियें वहाँ 20 हजार ही होते हैं। इधर जिसके खाते में 8000 थे उसने एतराज किया तब कम्पनी ने खाते में 20 हजार रुपये कर दिये।''

स्मृति में

बात 1992-93 की है। सी-54 नोएडा फेज-2 स्थित प्लास्टिक के बोरी-कट्टे बनाती ***चीविएट लिमिटेड*** फैक्ट्री में काम करता था। फैक्ट्री पहुँचने के लिये दिल्ली-टुण्डला रेल लाइनें पार करनी पड़ती थी। सुबह 7 बजे की शिफ्ट में 5 मिनट देरी से पहुँचने पर कम्पनी नौकरी से निकालने लगी। आपस में सोच-विचार कर एक दिन सुबह 7 बजे फैक्ट्री पहुँचने की बजाय हम सब नोएडा फेज-2 चौराहे पर एकत्र हुये। फिर एक-एक, दो-दो कर 7½बजे फैक्ट्री चले। गार्ड को परसनल मैनेजर ने अन्दर आने देने को कहा। सब के अन्दर पहुँचने के बाद साहब ने पूछा, लेट क्यों ? रेलवे क्रासिंग के कारण देरी होती है, लाने-ले जाने के लिये गाड़ी का प्रबन्ध कम्पनी करे। तब मैनेजमेन्ट ने 80 साइकिलें मजदूरों को दी थी।

पत्र-खत-लैटर

अपने पैरों पर कुल्हाडी मारें या अपने पेट पर लात ?

ये मान कर चलना चाहिये कि अगर जिन्दगी की दो जरूरतों में अनबन हो रही हो तो व्यवस्था में कुछ गड़बड़ी है। एक तरफ हमारी जरूरत है कि रोजगार रहे। दूसरी तरफ ये भी कि जिन्दगी धीमी मौत न रहे। फैक्ट्री से वेतन मिलता है, तो जहरीली गैसें, जानलेवा मशीनें, साँसों में रेशे-कण, इत्यादी भी। घर में राहत है, लेकिन फैक्ट्री का धुँआ, सिमेन्ट की धूल, बीमारियों की सम्भावना भी। रात के खाने में कल की मेहनत का जोर भी है, और कीटनाशक तथा रसायनिक खाद भी। याने कि इस दिशा में ये निश्चित है कि जिन्दगी होगी, मगर राम भरोसे।

इस से बाहर कैसे निकला जाये ? फैक्ट्रियाँ हर कहीं हैं। गाड़ियाँ भी। मतलब प्रदूषण भी सारी दुनिया की समस्या है। पेरिस में सरकार ने निजी गाड़ियाँ बन्द कर दी। अब हर कोई बस, ट्रेन ही लेता है। क्या फैक्ट्री बन्द की जाये ? क्या ये हो पायेगा ? फिर रोजी का समाधान ? कोई कहता है आँख मूँद के काम करो। काम में ही खतरा है, आँख मूँदने पर तो और भी ज्यादा होगा।

मतलब इस व्यवस्था में दो दानवों में से एक को चुनना होगा। तो मान लेना चाहिये कि गड़बड़ी दानवों में नहीं, व्यवस्था में है। फिर सवाल ये निकलता है, हम यहाँ कैसे पहुँचे ? इसके आगे कैसे चलें ?

— कुछ युवा मित्र

निमंत्रण

फरवरी में 22 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधाअनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

Ph. 0129-6567014

E-mail < baatein1@yahoo.co.uk >

- ✶ *अपने अनुभव व विचार मजदूर समाचार में छपवा कर चर्चाओं को और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।*
- ✶ *बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दें ।*
- ✶ *महीने में एक बार छापते हैं, 13,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। चर्चाओं के लिए समय निकालें।*

बात लेने की है

कम्पनियों द्वारा सार्वजनिक किये जाते बही-खातों की जाँच-पड़ताल का एक परिणाम यह है : फैक्ट्री में काम करती-करता प्रत्येक मजदूर एक महीने में अठारह से बीस लाख रुपये का उत्पादन करता-करती है। और, दिल्ली के इर्द-गिर्द के क्षेत्रों में फैक्ट्री मजदूरों की तनखायें पाँच हजार से पचास हजार रुपये के दायरे में हैं। हम जो उत्पादन करते हैं उसका अठानवे-निन्यानवे प्रतिशत कहाँ जाता है ? उसका क्या होता है ?

सरकारें न्यूनतम वेतन निर्धारित करती हैं। सरकारों के कानूनों के अनुसार जो तय की है उससे कम तनखा कम्पनियाँ नहीं दे सकती। लेकिन जहाँ देने वाली बात रहती है वहाँ निर्धारित न्यूनतम से कम तनखा देते हैं। और, जहाँ लेने वाली बात रहती है वहाँ हम फैक्ट्री मजदूरों को तीस-चालीस-पचास हजार रुपये तनखा लेते देखते हैं। इसलिये बात निर्धारित न्यूनतम वेतन से अधिक लेने की है। जो है उससे ज्यादा के लिये विचार करते और कदम उठाते समय यह ध्यान में रखना बनता है कि एक फैक्ट्री मजदूर आज एक महीने में बीस लाख रुपये का प्रोडक्शन करती-करता है।

दिल्ली सरकार द्वारा 1 अक्टूबर 2014 से निर्धारित न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक	8632 रुपये मासिक
अर्ध-कुशल श्रमिक	9542 रुपये मासिक
कुशल श्रमिक	10,478 रुपये मासिक

हरियाणा सरकार द्वारा 1 नवम्बर 2014 से निर्धारित न्यूनतम वेतनः

अकुशल श्रमिक	7400 रुपये मासिक
अर्ध-कुशल ***ब***	8160 रुपये मासिक
कुशल श्रमिक ***अ***	8570 रुपये मासिक
उच्च कुशल श्रमिक	9450 रुपये मासिक

1 नवम्बर 2014 से निर्धारित न्यूनतम वेतन हरियाणा सरकार ने 14.8.2014 को प्रकाशित किये थे और एतराज के लिये दो महीने का समय दिया था। किसी ने भी 14 अक्टूबर तक कोई एतराज नहीं किया था। इसलिये 1 नवम्बर से नये ग्रेड लागू हो गये।

मुंजाल किरियु के बहाने

प्लॉट 192 सैक्टर-4, आई. एम.टी. मानेसर में 2003 में फाउण्ड्री और 2007 में मशीनिंग का कार्य आरम्भ हुआ। ***मुंजाल किरियु*** कम्पनी की इस फैक्ट्री में ***मारुति सुजुकी, होण्डा, टोयोटा, निसान, जनरल मोटर, हयुन्दई*** कारों के ब्रेक डिस्क और ब्रेक ड्रम स्थाई, ट्रेनी, अस्थाई मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में बनाते थे। सब मजदूरों की तनखा कम, प्रोविडेन्ट फण्ड में हेराफेरी, गर्म-भारी-अत्याधिक काम, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। अगल-बगल में काम करते मजदूरों में बनते जोड़ और बढते तालमेलों को डर तथा लालच से तोड़ने में कम्पनी फेल होने लगी। इस-उस बात पर मजदूरों द्वारा फैक्ट्री में उत्पादन बन्द करना आम बात बनी। फैक्ट्री पर मैनेजमेन्ट का कब्जा ढीला होते-होते 2012-2013 में कब्जा हटने की हालात बनने लगी।

बिचौलियों के बिना जब तक कम्पनियाँ मजदूरों पर नियन्त्रण बनाये रख पाती हैं तब तक कम्पनियाँ बिचौलियों को नहीं चाहती, बिचौलियों का विरोध करती हैं। लेकिन मजदूरों की हलचलें काबू से बाहर हो जाती हैं तब कम्पनियाँ मजदूरों पर नियन्त्रण स्थापित करने के लिये बिचौलियों से हाथ मिलाती हैं, बिचौलियों का इस्तेमाल करती हैं।

2013 के आरम्भ में मुंजाल किरियु फैक्ट्री में एक यूनियन स्थापित। कानून अनुसार परमानेन्ट मजदूर ही यूनियन के सदस्य। आज की परिस्थितियों में स्थाई-ट्रेनी-अप्रेन्टिस-अस्थाई मजदूरों में मेल से फैक्ट्री-स्तर पर वास्तविक मजदूर संगठन बनते हैं। मुंजाल किरियु में असल मजदूर संगठन को कमजोर कर उसे तोड़ने के लिये 26.11.2013 को तीन वर्ष के लिये यूनियन-मैनेजमेन्ट समझौते पर हस्ताक्षर। लेकिन स्थाई-ट्रेनी-अस्थाई मजदूरों के बीच जोड़ मजबूत साबित हुये और कानूनी तौर पर बाध्यकारी यूनियन-मैनेजमेन्ट समझौते को महीना भी नहीं हुआ था कि 3 ट्रेनी के पक्ष में 18.12.2013 को सब मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। पच्चीस दिन उत्पादन बन्द रहने के बाद यूनियन और मैनेजमेन्ट ने डिसमिस-डिसचार्ज वाले महीन जाल वाला समझौता किया।

मजदूर जब कम्पनी और यूनियन के झाँसे में नहीं आते। मजदूर जब शीघ्र थकते नजर नहीं आते और कम्पनी की उत्पादन की गरज बढती जाती है। तब मैनेजमेन्ट तथा यूनियन सीधे-सीधे मजदूरों से भिड़ने की बजाय साइड-स्टैप करती हैं। खीझ-भरे मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौतों में शब्दों के अधिक महीन जाल बुने जाते हैं और लीडर लोग मजदूरों की जीत, कम्पनी की पराजय की दहाड़ वाले भाषण देते हैं।

25 दिन फैक्ट्री में उत्पादन बन्द रहने के बाद 15.1.2014 को हुये यूनियन-मैनेजमेन्ट समझौते में ''जीत'' की असलियत मुंजाल किरियु परमानेन्ट मजदूरों के सामने अप्रैल में आने लगी। स्थाई मजदूरों ने मई में पहली बड़ी यूनियन से नाता तोड़ा और दूसरी बड़ी यूनियन का पल्लू पकड़ा। इस दौरान स्थाई-अस्थाई मजदूरों के बीच जोड़ों को काफी हद तक कमजोर कर चुकी मैनेजमेन्ट ने सीधे-सीधे परमानेन्ट मजदूरों पर आक्रमण किया। 195 स्थाई मजदूर 24.9.2014 को फैक्ट्री के बाहर और 400 अस्थाई मजदूर, 100 डिप्लोमा ट्रेनी, 43 स्थाई मजदूरों के जरिये फैक्ट्री में उत्पादन जारी। तब 25 सितम्बर को स्थाई मजदूरों ने दूसरी बड़ी यूनियन से नाता तोड़ा और फिर से पहली वाली बड़ी यूनियन का पल्लू पकड़ा।

195 स्थाई मजदूरों को मुंजाल किरियु फैक्ट्री से बाहर बैठे एक महीना हो गया, दो महीने हो गये, तीन महीने हो गये....... श्रम विभाग में तारीख-दर-तारीख। पहले-पहल बड़ी यूनियन वाले बहुत सक्रिय, फिर ढीले-ढाले, और फिर पूरी तरह किनारा कर लिया। कम्पनी ने नौकरी से निकालने के संग निलम्बन की सँख्या बढाई। अड़े रहने से कोई बात नहीं बनती देख, 24 सितम्बर से बाहर बैठे मुंजाल किरियु के स्थाई मजदूरों ने 15 जनवरी को कम्पनी की शर्तें मान ली। नौकरी से निकाले 9 और 20 सस्पैण्ड को बाहर छोड़ कर बाकी स्थाई मजदूर फैक्ट्री के अन्दर चले गये। मुंजाल किरियु का विवरण मजदूर समाचार के सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर तथा जनवरी अंकों में है।

फैक्ट्रियों में और निवास स्थानों पर मजदूरों के बीच अनेक प्रकार के सम्बन्ध, जोड़, तालमेल व्यापक हैं। फैक्ट्री के अन्दर स्थाई, ट्रेनी, अप्रेन्टिस, कैजुअल, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर एक-दूसरे से बल लेते हैं और एक-दूसरे को बल देते हैं। एक फैक्ट्री के मजदूर दूसरी फैक्ट्री के मजदूरों से बल प्राप्त करते हैं और दूसरी फैक्ट्री के मजदूरों को बल प्रदान करते हैं। आज औद्योगिक क्षेत्रों में हजारों फैक्ट्रियों अगल-बगल में हैं। ''मजदूरों के अपने कौन हैं ?'' का सीधा-सीधा उत्तर है अन्य मजदूर। और फिर, अन्य मेहनतकशों से सम्बन्ध हैं जो मजदूरों को शक्ति प्रदान करते हैं।

बहुत स्वागत योग्य

बीस मजदूरों का एक समूह ओखला, नोएडा, फरीदाबाद से सम्बन्ध रखता है। इस मजदूर समूह ने अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों से सम्बन्ध बढाने की योजना बनाई है। ओखला, नोएडा, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्रियों के मजदूरों से नियमित चर्चायें करना और इन बातों को प्रकाशित करवा कर फैलाने का तय किया है। इसे करने के लिये बीस मजदूरों के इस समूह ने तीन-तीन, चार-चार वाली अपनी टोलियाँ बनाई हैं। मजदूरों के इस सामुहिक प्रयास की पहली किस्त मजदूर समाचार में प्रकाशित करते हुये हम आनन्द का अनुभव कर रहे हैं। हम आशा करते हैं कि कम्पनी-मैनेजमेन्ट क्या-क्या करती हैं की बजाय मजदूर क्या-क्या करते हैं वाली बातें इन साथियों से हमें मिलेंगी।

✶ प्लॉट बी-76 सैक्टर-65, नोएडा स्थित एक्सपोर्ट कम्पनी में 150 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 20 की ही हैं। और इन 20 को भी चार महीने में हिसाब दे कर नये सिरे से भर्ती कर लेते हैं। यहाँ हैल्परों की तनखा 6000 और सिलाई कारीगरों की 7000 रुपये है।

✶ प्लॉट एफ-88 ओखला फेज-1 स्थित शाही एक्सपोर्ट फैक्ट्री में जहाँ निर्धारित उत्पादन 25 पीस प्रति घण्टा है वहाँ मैनेजमेन्ट 40 पीस निकालने के लिये दबाव डालती है। सिलाई कारीगर को 8 घण्टे के 320 रुपये देते हैं। कम्पनी 8 घण्टे में एक कप चाय तक नहीं देती। पीने का पानी खराब। आपातकालीन छुट्टी ले कर घर जाते हैं तब लौटने पर नौकरी पर नहीं रखते। फैक्ट्री में साप्ताहिक अवकाश नहीं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, बोनस नहीं।

✶ प्लॉट बी-13 ओखला फेज-2 में सर्जिकल सामान बनाने वाली जी एस टी फैक्ट्री और सप्लाई कम्पनी हैल्थजीन हैं। दोनों में 100-100 मजदूर काम करते हैं। दोनों में तनखा देरी से, 20-25 तारीख तक। जी एस टी में ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। हैल्थजीन में भर्ती के समय हैल्पर की तनखा 5500 रुपये और 6 महीने बाद 6000 रुपये, जबकि दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन 8632 रुपये है।

✶ प्लॉट ए-187 ओखला फेज-1 स्थित कोनिका एक्सपोर्ट में सिलाई कारीगर को 8 घण्टे के 330 रुपये देते हैं जबकि दिल्ली सरकार द्वारा कुशल श्रमिक के लिये निर्धारित न्यूनतम वेतन 8 घण्टे के लिये 403 रुपये है। टेलरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, बोनस नहीं।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/15-17
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।